UGC Approved Journal No – 49297
(IIJIF) Impact Factor - 3.262

Regd. No. : 1687-2006-2007

ISSN 2231-4113

Śodha Pravāha

(A Multidisciplinary Refereed Research Journal)

Editor : S. B. Poddar

VOL. VIII

ISSUE 1

JANUARY 2018

Chief Editor : S. K. Tiwari

Academic Staff College
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005, INDIA

E-mail : sodhapravaha@gmail.com

www.sodhapravaha.blogspot.com

42(C)

लिंग एवं सामाजिक आर्थिक-प्रस्थिति के आधार पर छात्रों एवं छात्राओं में दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अनुभा शुक्ला *

आज जहाँ मानव सभ्यता के उच्च शिखर पर पहुँचने के लिए प्रयासरत है, वहीं वह अपने आपको दुश्चिन्ताओं एवं आशंकाओं से घिरा हुआ अनुभव कर रहा है। हमारे देश के नागरिक तथा भविष्य के होने वाले कर्णधार जो इस समय विद्यार्थी जीवन यापन कर रहे हैं, दुश्चिन्ता से विशेष रूप से ग्रस्त हैं। दुश्चिन्ता का प्रभाव व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ता है। व्यक्ति का मनोशारीरिक संगठन इस दुश्चिन्ता के कारण छिन्न–भिन्न हो जाता है। अतः एक विघटित व्यक्तित्व को लेकर स्वस्थ समाज तथा राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः व्यक्ति को स्थिर तथा सुसंगत बनाने के लिए आवश्यक है– उसका दुश्चिन्ता से ग्रस्त न होना। वुटजिन तथा एकोसेला के अनुसार दुश्चिन्ता एक भय एवं आशंका की अवस्था है, जो अनेक प्रकार के कार्यों को प्रभावित करती है। छात्र एवं छात्राओं का दुश्चिन्ता से युक्त होना आज मानव समाज के लिए अभिशाप है। छात्रों एवं छात्राओं की दुश्चिन्ता का एक पहलू शिक्षा है। अतः प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि छात्रों एवं छात्राओं में किसे अधिक दुश्चिन्ता है तथा वे किन–किन विषयों को लेकर दुश्चिन्तित हैं। किस सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के छात्र–छात्राएँ अधिक दुश्चिन्तित हैं।

उद्देश्य

1. वाराणसी नगर के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं की दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्च सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं में व्याप्त दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. उच्च–मध्य सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं में व्याप्त दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।
4. निम्न–मध्य सामाजिक आर्थिक स्तर के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं में व्याप्त दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

1. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की दुश्चिन्ता में अन्तर नहीं है।
2. उच्च सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातक स्तर के छात्रों और छात्राओं एवं स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं की दुश्चिन्ता में अन्तर नहीं है।
3. उच्च मध्य सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातक स्तर के छात्रों और छात्राओं एवं स्नातकोत्तर छात्रों और छात्राओं की दुश्चिन्ता में अन्तर नहीं है।
4. निम्न–मध्य सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातक स्तर के छात्रों और छात्राओं तथा स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं की दुश्चिन्ता में अन्तर नहीं है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध–कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से वाराणसी नगर के स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों और छात्राओं को लिया गया है। इन छात्रों की आयु सीमा 18 से 21 वर्ष है।

न्यायदर्श : न्यादर्श में 200 स्नातक एवं 200 स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं को लिया गया है। सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के आधार पर इन्हें तीन वर्गों–उच्च, उच्च–मध्य तथा निम्न–मध्य वर्गों में बाँटा गया है, जिसमें उच्च तथा उच्च–मध्य में 175–175 स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र/छात्राएँ हैं।

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर

निम्न–मध्य सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के छात्रों एवं छात्राओं की संख्या कम ही प्राप्त हो पायी है, अतः इनकी संख्या मात्र 75–75 ही है।

शोध उपकरण : इन छात्र/छात्राओं की दुश्चिन्ता का मापन दुर्गानन्द सिन्हा द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत 'सिन्हा दुश्चिन्ता मापनी' द्वारा किया है, जिसमें कुल 100 प्रश्न हैं। इनकी सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति का आँकलन डॉ. बी.के. सिंह, एस. शर्मा एवं सुमन द्वारा निर्मित तथा प्रमाणीकृत सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति मापनी द्वारा किया गया है।

तालिका–1

लिंग के आधार पर छात्रों एवं छात्राओं में दुश्चिन्ता

छात्र/छात्राएँ स्नातक एवं स्नातकोत्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मूल्य
छात्र	200	35.15	16.20	0.82NS
छात्राएँ	200	32.75	18.00	

तालिका से स्पष्ट है कि छात्राओं की दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों और छात्राओं की दुश्चिन्ता में कोई अन्तर नहीं है।

तालिका–2

सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के आधार पर छात्रों एवं छात्राओं में दुश्चिन्ता

सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति	छात्र एवं छात्राएँ	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी. मूल्य
उच्च	स्नातक छात्र एवं छात्राएँ	175	34.07	13.14	1.46NS
	स्नातकोत्तर छात्र एवं छात्राएँ	175	37.60	15.75	
उच्च मध्य	स्नातक छात्र एवं छात्राएँ	175	43.04	17.10	2.53**
	स्नातकोत्तर छात्र एवं छात्राएँ	175	34.04	18.18	
निम्न मध्य	स्नातक छात्र एवं छात्राएँ	75	41.57	11.77	2.02NS
	स्नातकोत्तर छात्र एवं छात्राएँ	75	54.50	18.48	

** 0.01 स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका के निरीक्षण से ज्ञात है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातक छात्रों एवं छात्राओं तथा स्नातकोत्तर छात्रों और छात्राओं की दुश्चिन्ता में सार्थक अन्तर (0.05 स्तर पर) है। कि उच्च–मध्य सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातकोत्तर छात्र–छात्राओं की अपेक्षा स्नातक छात्रों एवं छात्राओं में दुश्चिन्ता अधिक है। निम्न मध्य सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के स्नातक छात्रों और छात्राओं की दुश्चिन्ता में अन्तर सार्थक है। निम्न मध्य स्नातकोत्तर छात्रों और छात्राओं के मध्यमान (54.50>41.57) यह संकेत करता है कि स्नातकोत्तर छात्रों और छात्राओं में दुश्चिन्ता अधिक है।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं–

1. लिंग के आधार पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों एवं छात्राओं की दुश्चिन्ता में अन्तर नहीं है।
2. उच्च–मध्य स्नातक छात्रों एवं छात्राओं में स्नातकोत्तर की अपेक्षा दुश्चिन्ता अधिक है।
3. निम्न–मध्य स्नातकोत्तर छात्रों और छात्राओं में दुश्चिन्ता अधिक है।

सन्दर्भ :

- जी.एल. जुल्का (1973), एग्रेशन फियर एण्ड एंग्जायटी इन चिल्ड्रेन (देयर एजूकेशनल इम्लीकेशन) पी–एच.डी., शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, पृ. 129.
- जिन्दल एण्ड एस.के. पाण्डेय (1975), एंग्जाइटी एण्ड अचीवमेंट ए रिसर्च स्टडी ऑफ हाई एण्ड लो अचीवर्स, पी–एच.डी., बिन स्टेट यूनिवर्सिटी, पृ. 112.
- मायाशंकर सिंह (1986), उत्तर प्रदेशीय शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की दुश्चिन्ता एवं तत्सम्बन्धी कतिपय घटकों का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्धन, सं.स.वि.वि., वाराणसी, पृ. 129.
- बीना सिंह (1993), ए स्टडी आफ सम फैक्टर्स रिलेटेड टु ओवर एण्ड अण्डर अचीवमेंट इन मेडिकल फैकल्टी जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च वाल्यूम III, पृ. 34.
- मीनू गिरि (1995), इफेक्ट ऑफ एंग्जाइटी इंटेलीजेन्स एण्ड सोशियो–इकोनॉमिक स्टेटस आन एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ प्राइमरी चिल्ड्रेन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, बी.एच.यू., पृ. 159.

***